International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746; Impact Factor: RJIF 5.34
Received: 17-01-2019; Accepted: 21-02-2019
www.alleducationjournal.com
Volume 4; Issue 2; March 2019; Page No. 64-66

अनूपपुर जिले में प्रारंभिक शिक्षा स्तर अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास हेतु संचालित योजनाओं का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ0 जय सिंह[1], सोना सिंह[2]
[1] प्राध्यापक शिक्षा, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।
[2] शोध छात्र शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
इस शोध पत्र के द्वारा प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास हेतु संचालित योजनाओं का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है। शोध क्षेत्र में 85.00 प्रतिशत प्रधानाध्यापक, 62.00 प्रतिशत शिक्षक, 76.50 प्रतिशत अभिभावक व 68. 06 प्रतिशत छात्रों का अभिमत है कि शोध क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास हेतु संचालित प्रोत्साहन योजनाओं का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। शोध क्षेत्र में 90.00 प्रतिशत प्रधानाध्यापक, 61.00 प्रतिशत शिक्षक, 69.50 प्रतिशत अभिभावक व 68.88 प्रतिशत छात्रों का अभिमत है कि शोध क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति के विकास हेतु संचालित योजनाओं का क्रियान्वयन मानक के अनुरूप हो रहा है।

मूल शब्द : अनूपपुर जिला, प्रारंभिक शिक्षा स्तर, अनुसूचित जनजाति, विद्यार्थी, योजनाएँ।

1. प्रस्तावना
शिक्षा अंधकार से प्रकाश की ओर मानव यात्रा का नाम है। शिक्षा से मनुष्य के अन्तः चक्षु खुल जाते हैं। उसे आत्मिक तथा अलौकिक प्रकाश मिलता है। शिक्षा से सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास होता है। किसी भी राष्ट्र या समाज में जो उन्नति परिलक्षित होती है, वह उस राष्ट्र अथवा समाज की शिक्षा का प्रतिफल है तथा किसी समाज या राष्ट्र को अधोगति में जाना अशिक्षा का द्योतक है। शिक्षा द्वारा इस ज्ञान में वृद्धि होती है, जो पारस्परिक संबंधों के निर्धारण तथा व्यक्ति के विकास में सहायक है।

आजादी के बाद अनुसूचित जनजाति में शैक्षिक विकास की तमाम शासकीय प्रोत्साहन योजनाओं का लाभ देने के बाद भी इन वर्गों में शिक्षा का प्रसार अभी काफी कम है जिससे इन वर्गों का न्यायोचित व समुचित प्रतिनिधित्व समाज की विभिन्न विकासात्मक योजनाओं व कार्यक्रमों की पूर्ति में नहीं हो पाया है। शिक्षा के सभी स्तरों पर समान अवसर देने, नौकरियों व विशिष्ट शिक्षण प्रशिक्षण हेतु न्यूनतम शैक्षिक उपलब्धि स्वीकार करने पर भी इनकी अपनी वस्तुस्थिति से ऊपर उठने में प्रगति परिलक्षित नहीं हो पा रही है। अतः यह प्रश्न अनायास ही उत्पन्न होता है कि अनुसूचित जनजाति के लोग शैक्षिक, सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से पिछड़े क्यों है? यह मुख्य आधारभूत प्रश्न है।

शोधार्थी द्वारा शोध हेतु चयनित अनूपपुर जिले में अनुसूचित जनजाति वर्ग के निवासियों की बहुलता है, तथा इस वर्ग की सामाजिक–आर्थिक स्थिति अत्यन्त दयनीय है। इस वर्ग की समाजिक व्यवस्थाएँ तथा मान्यताएँ इतनी रूढ़िवादी है जो उनकी शिक्षा के विकास की प्रमुख अवरोधक हैं। आर्थिक दशा दयनीय होने के कारण भी प्रमुख रूप से शिक्षा के विकास में अवरोधक है।

2. अध्ययन की आवश्यकता
शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल अनूपपुर जिले वरन् सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास हेतु संचालित योजनाओं हेतु शासकीय प्रयासों व प्रभावों का आकंलन किया गया है। वर्तमान में शासन के समक्ष शिक्षा को जन–जन तक पहुँचाना एक मुख्य उद्देश्य है, लेकिन यह कार्य अत्यंत चुनौतीपूर्ण है। इसलिये शैक्षिक क्षेत्र में ऐसे अनुसंधानों एवं नवाचारों की आवश्यकता है, जो शिक्षा के समग्र विकास तथा स्वयं व राष्ट्र निर्माण हेतु उपयोगिता को सुनिश्चित कर सके।

3. शोध की परिकल्पनायें
प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् हैः–

1. शोध क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास हेतु संचालित प्रोत्साहन योजनाओं का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।
2. शोध क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति के विकास हेतु संचालित योजनाओं का क्रियान्वयन मानक के अनुरूप हो रहा है।

4. उद्देश्य
प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया हैः–

- शोध क्षेत्र में शासकीय प्रयासों / योजनाओं के फलस्वरूप शैक्षिक सूचको पर पड़ने वाले प्रभाव की जानकारी प्राप्त करना।
- शोध क्षेत्र में शासकीय योजनाओं के क्रियान्वयन की मानीटरिंग की जानकारी प्राप्त करना।

5. शोध समस्या का सीमांकन
5.1 भौगोलिक परिसीमनः प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला अनूपपुर है। इसके अन्तर्गत 4 विकासखण्ड – अनूपपुर, पुष्परागढ़, जैतहरी व कोतमा है।

5.2 विषयवस्तु का परिसीमनः अध्ययन की विषयवस्तु का परिसीमन, जिला अन्तर्गत स्थित प्रारंभिक शिक्षा स्तर (प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक), जनशिक्षा केन्द्र, ब्लाक शिक्षा केन्द्र, जिला शिक्षा केन्द्र द्वारा किये जाने वाले शिक्षा अधिकार अधिनियम सम्बन्धी कार्यक्रम इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित है।

6. शोध विधियाँ

शोध कार्य को संपूर्णता प्रदान करने हेतु कई प्रकार की शोध विधियों का उपयोग किया जाता है। शोध विधियों के मुख्य प्रकार ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं प्रयोगात्मक है। शोध कार्य के अनुरूप प्रत्येक शोध विधि की अपनी विशेषताएँ एवं उपयोगिता है। प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया गया है –

6.1 सर्वेक्षण विधिः प्राथमिक स्त्रोतों से प्रदत्तों के संकलन एवं पूर्व संचालित प्रदत्तो के सत्यापन हेतु शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया है।

6.2 अवलोकन विधिः शोध अध्ययन के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास हेतु संचालित योजनाओं की वर्तमान स्थिति का पता लगाने हेतु न्यादर्श के रूप में चयनित प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों का अवलोकन किया गया है।

6.3 साक्षात्कार विधिः शोध क्षेत्र अनूपपुर जिले में प्रारंभिक शिक्षा स्तर प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास हेतु संचालित योजनाओं को ज्ञात करने के लिए इस क्षेत्र में संलग्न शिक्षक, प्राचार्य तथा अभिभावकों से उनकी अभिवृत्तियों व वस्तुस्थिति का पता लगाने हेतु साक्षात्कार किया गया है।

6.4 सांख्यिकी विधिः प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार माध्य, माध्यिका एवं बहुलक, दो चरों में सार्थक अन्तर के आंकलन हेतु मध्यमान विचलन, टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

7. न्यादर्श चयन

अनुसंधान तथा शोध के प्रयोग का प्रारूप न्यादर्श की प्रविधि पर आधारित होता है। प्रारंभिक स्तर (प्राथमिक व माध्यमिक) विद्यालयों का अध्ययन करना संभव नहीं है, इसलिए जिले के सभी विकासखण्डों से 10–10 विद्यालय कुल 40 विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन द्वारा अध्ययन हेतु किया गया है। न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों से 2–2 शिक्षक कुल 80 शिक्षक, प्रत्येक विद्यालय के प्रधानाध्यापक व 5–5 अभिभावक कुल 200 अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 10 छात्र व 10 छात्राएं कुल 800 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया है।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास हेतु संचालित योजनाओं की वर्तमान स्थिति पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – पाठक, पी.डी. (2007)[1], श्रीवास्तव, डी.एस. (2006)[2], पाण्डेय, रामशकल (2007)[3], वर्मा, डॉ. जग प्रसाद (2016)[4], सिंह, ममता (2007)[5] एवं प्रसाद, गोमती (2009)[6]।

9. शोध क्षेत्र का परिचय

मध्यप्रदेश अनुपपुर जिला 15 अगस्त 2003 को नया जिला बना हैं। सम्पूर्ण विश्व के मानचित्र पर इस जिले की स्थिति $22^{o}07'$ से $23^{o}25'$ उत्तरी अक्षांश तथा $81^{o}10'$ से $82^{o}10'$ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना कमांक – 01: "शोध क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास हेतु संचालित प्रोत्साहन योजनाओं का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।"

सारणी 1: शोध क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास हेतु संचालित प्रोत्साहन योजनाओं का सकारात्मक प्रभाव का अध्ययन

क्र.	न्यादर्श	न्यादर्श में चयनित संख्या	विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास हेतु संचालित प्रोत्साहन योजनाओं का सकारात्मक प्रभाव					
			पड़ा है		नही पड़ा है		पता नही	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	प्रधानाध्यापक	40	34	85.00	4	10.00	2	5.00
2.	शिक्षक	100	62	62.00	10	10.00	8	8.00
3.	अभिभावक	200	153	76.50	27	13.50	20	10.00
4.	छात्र	800	544	68.06	156	19.50	100	12.44
योग		1140	793	68.97	197	18.20	130	11.80

सारणी क्रमांक 1 में संकलित तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि 85.00 प्रतिशत प्रधानाध्यापक, 62.00 प्रतिशत शिक्षक, 76.50 प्रतिशत अभिभावक व 68.06 प्रतिशत छात्रों का अभिमत है कि शोध क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास हेतु संचालित प्रोत्साहन योजनाओं का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

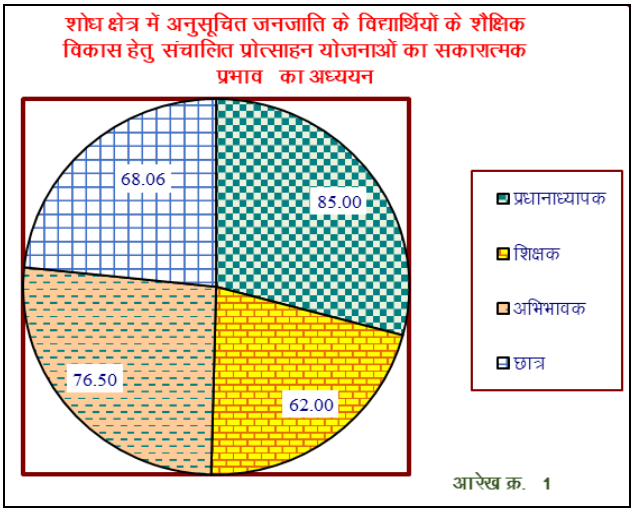

सारणी क्रमांक 1 में संकलित तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि 68.97 प्रतिशत इस बात से सहमत हैं कि शोध क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास हेतु संचालित प्रोत्साहन योजनाओं का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। 18.20 प्रतिशत यह मानतें है कि शोध क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास हेतु संचालित प्रोत्साहन योजनाओं का सकारात्मक प्रभाव नही पड़ा है, जबकि 11.80 प्रतिशत को शोध क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास हेतु संचालित प्रोत्साहन योजनाओं का सकारात्मक प्रभाव, के सम्बंध में कुछ भी पता नही है।
अतः परिकल्पना क्र. 1 सत्यापित होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 02 "शोध क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति के विकास हेतु संचालित योजनाओं का क्रियान्वयन मानक के अनुरूप हो रहा है।"

सारणी 2: शोध क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति के विकास हेतु संचालित योजनाओं का क्रियान्वयन का अध्ययन का अध्ययन

क्र.	न्यादर्श	न्यादर्श में चयनित संख्या	अनुसूचित जनजाति के विकास हेतु संचालित योजनाओं का क्रियान्वयन मानक के अनुरूप					
			हो रहा है		नही हो रहा है		पता नही	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	प्रधानाध्यापक	40	36	90.00	2	5.00	2	5.00
2.	शिक्षक	100	61	61.00	20	20.00	19	19.00
3.	अभिभावक	200	139	69.50	33	16.50	28	14.00
4.	छात्र	800	535	66.88	129	16.12	136	17.00
योग		1140	771	67.63	184	16.14	185	16.23

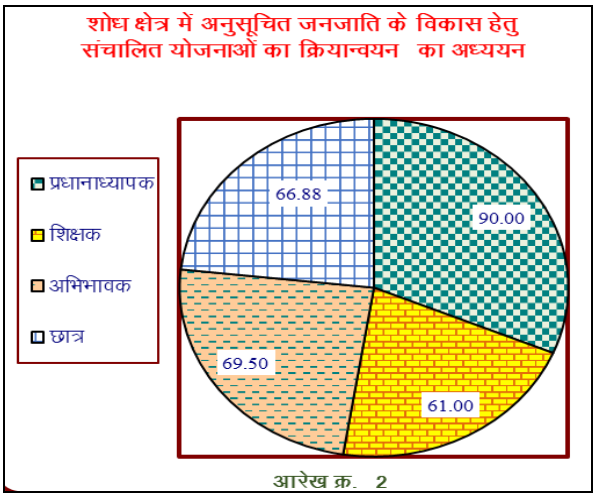

सारणी क्रमांक 2 में संकलित तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि 90.00 प्रतिशत प्रधानाध्यापक, 61.00 प्रतिशत शिक्षक, 69.50 प्रतिशत अभिभावक व 66.88 प्रतिशत छात्रों का अभिमत है कि शोध क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति के विकास हेतु संचालित योजनाओं का क्रियान्वयन मानक के अनुरूप हो रहा है।
सारणी क्रमांक 2 में संकलित तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि 67.63 प्रतिशत इस बात से सहमत हैं कि शोध क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति के विकास हेतु संचालित योजनाओं का क्रियान्वयन मानक के अनुरूप हो रहा है। 16.14 प्रतिशत यह मानतें है कि शोध क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति के विकास हेतु संचालित योजनाओं का क्रियान्वयन मानक के अनुरूप नही हो रहा है, जबकि 16.23 प्रतिशत को इस सम्बंध में कुछ भी पता नही है।
अतः परिकल्पना क्र. 2 सत्यापित होती है।

11. निष्कर्ष

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष निम्नानुसार हैः

- शोध क्षेत्र में 85.00 प्रतिशत प्रधानाध्यापक, 62.00 प्रतिशत शिक्षक, 76.50 प्रतिशत अभिभावक व 68.06 प्रतिशत छात्रों का अभिमत है कि शोध क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास हेतु संचालित प्रोत्साहन योजनाओं का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।
- शोध क्षेत्र में 90.00 प्रतिशत प्रधानाध्यापक, 61.00 प्रतिशत शिक्षक, 69.50 प्रतिशत अभिभावक व 66.88 प्रतिशत छात्रों का अभिमत है कि शोध क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति के विकास हेतु संचालित योजनाओं का क्रियान्वयन मानक के अनुरूप हो रहा है।

12. संदर्भ

1. पाठक, पी.डी. (2007), भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं इक्कीसवां संस्करण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
2. श्रीवास्तव, डी.एस. (2006), भारत में शिक्षा का विकास, द्वितीय संस्करण, साहित्य प्रकाशन, आगरा.
3. पाण्डेय, रामशकल (2007), उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, चतुर्थ संस्करण, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा.
4. वर्मा, डॉ. जग प्रसाद, सिंगरौली जिले में उच्च प्राथमिक स्तर पर आदिवासी शिक्षा के विकास का समीक्षात्क अध्ययनए International Journal of Multidisciplinary Education and Research. 2016; 1(2):01-04.
5. सिंह, ममता प्राथमिक स्तर पर निजी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की प्रशिक्षण आवश्यकताओं का अध्ययन, Researches and Studies. 200758 PP. 85.
6. प्रसाद, गोमती (2009), रीवा संभाग की अनुसूचित जाति एवं जनजाति के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति का समीक्षात्मक अध्ययन, पी–एच.डी. शिक्षा, अ.प्र.सिंह वि.वि., रीवा.